IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

सीतापुर जनपद के बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्मसम्मान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

नमिता त्रिपाठी
रिसर्च स्कॉलर, श्री ज़े. जे. टी. विश्वविद्यालय झुंझुनू (राजस्थान)
सहायक प्रोफेसर, बी.एड.,महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई, उ.प्र.

सारांश

एक शिक्षक के लिए संतोषजनक कक्षागत अंर्तक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि उनका विषय ज्ञान पर्याप्त हो एवं शिक्षण–अधिगम के मनोविज्ञान से वह पूर्ण रूप से परिचित हों। इसी क्रम में छात्र के साथ उद्देश्य पूर्ण कक्षागत अंर्तक्रिया के लिए यह भी आवश्यक है की शिक्षक संवेगात्मक रूप से परिपक्व हो एवं उसमें छात्र–छात्राओं के साथ अंतर क्रिया के दौरान संवेगात्मक दृ ढ़ता दिखाई देती हो। यह संवेगात्मक परिपक्वता या संवेगात्मक दृढ़ता व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि का महत्वपूर्ण पक्ष है शोधकर्त्री द्वारा वर्तमान अध्ययन में शिक्षक के संवेगात्मक स्थिति के उन्नयन हेतु संवेगात्मक बुद्धि को अध्ययन का संदर्भ बनाया गया है। प्रायः यह देखने में आता है कि यदि किसी व्यक्ति में स्व का बोध पर्याप्त एवं प्रबलित है तो ऐसी स्थिति में वह स्वयं को उपयोगी मानता है एवं उसे अपने मूल्य का बोध होता है। यह मूल्य मनोवैज्ञानिक संप्रत्यय के रूप में आत्म सम्मान के रूप में अभिव्यक्त है । वर्तमान अनुसंधान में शोधकर्त्री ने बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके आत्म सम्मान के विविध आयाम का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है।

प्रस्तावना

वर्तमान परिवेश में शिक्षा जगत की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षक के व्यवसाय में मूल्यगत बदलाव दृष्टिगत है। एक शिक्षक के लिए विषय के पर्याप्त ज्ञान के साथ–साथ यह भी आवश्यक है कि उसका मानसिक स्वास्थ्य उत्तम हो। इसी क्रम में शिक्षक में औसत या उससे अधिक संवेगात्मक बुद्धि अपेक्षित है, जिससे वह स्वयं को कक्षागत या सामाजिक प्रकार के द्वन्द एवं तनाव से मुक्त रख सकें। यद्यपि सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन में स्वयं को तनाव से मुक्त रखना सहज नही है, वरन् इसके लिए अनेक प्रयास एवं संवेगात्मक संतुलन अपेक्षित है।

एक व्यावसायिक शिक्षक में संवेगात्मक बुद्धि के साथ–साथ दृढ़ आत्मभाव एवं उच्च बुद्धि अपेक्षित है जिससे वह स्वयं की उपलब्धियों के साथ–साथ छात्रों के गुणात्मक सम्वर्धन में सहयोग कर सके।

उपरोक्त सन्दर्भ को समझने के लिए अध्ययन से सम्बन्धित चरों को निम्नवत परिभाषित किया गया है–

संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ एवं परिभाषाऐं :

संवेगात्मक बुद्धि से आशय व्यक्ति की अपनी उस क्षमता से है जिसके द्वारा वह अपनी संवेगात्मक परिस्थितियों को समझता है। सैलोवी एवं मेयर ने सन् 1990 में संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया कि यह किसी व्यक्ति द्वारा

अपनी एवं अन्य व्यक्ति के संवेगों को समझने की व्यक्तिगत क्षमता होती है। जिसके द्वारा व्यक्ति बेहतर समझ, सहानुभूति, संवेगात्मक नियमन, आत्म अभिप्रेरण एवं सामाजिक कौशिल सीखता है।

डेविज एवं जोल (1964) के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि का सम्मान साठ के दशक से ही साहित्य में पाया जाता है परन्तु डेनियल गोलमैन की पुस्तक संवेगात्मक बद्धि के द्वारा 1995 से यह चलन में आया । गोलमैन के 'गोलमेन्स काम्पिटेन्सीज एण्ड स्किल माडल ऑफ इमोशनल इण्टेलीजेन्स' (गोलमैन 1995) 'द एविलिटी माडल ऑफ इमोशनल इण्टेलीजेन्स' मेयर केरूसों एवं सेलोने 1999 तथा 'द ट्रेट माडल ऑफ इमोशनल अण्टेलीजेन्स' (पेट्राइड्ज 2001) के द्वारा संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न स्वरूप एवं परिभाषाएं बौद्धिक जगत में प्रचलित हुई है।

मैकरोवेली एवं अन्य (2009) तथा हैनसेने एवं लिगार्ड (2012) ने बताया कि ट्रेट इमोशनल इन्टेलिजेन्स एवं शैक्षिक उपलब्धियों में धनात्मक सम्बन्ध है जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रेरित करते हैं। शीलगुण संवेगात्मक बुद्धि से आशय संवेगात्मक आत्म आत्मबोध के उस वितरण से है जो व्यक्तित्व के निम्न स्तर पर पाया जाता है । पेट्राइड्स पिटा एवं कौकिनाकी (2007) के अनुसार शील गुण संवेगात्मक बुद्धि से आशय व्यक्ति की संवेगात्मक दक्षता के आत्मबोध से है। 'शीलगुण माडल' गोलमैन के संवेगात्मक बुद्धि के रूप में जिसमें संवेगात्मक बुद्धि को संज्ञानात्मक योग्यता के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है। शीलगुण संवेगात्मक बुद्धि प्रश्नावली में चार डोमेन यथा बेहतरी, आत्म नियन्त्रण, संवेगात्मक तथा सामाजीकरण से जुडे 15 स्केल होते है। निकोलाजक (2007) ने संदर्भित उपकरण की विश्वसनीयता एवं वैधता को यथेष्ट बताया है।

बुद्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि प्रायः समीपवर्ती सम्प्रत्यय है जिन्हें अलग–अलग नहीं देखा जा सकता है। परन्तु दोनों के मध्य एक क्षीण स्तर का सह–सम्बन्ध पाया जाता है जो यह संकेत देता है कि ये दोनों परस्पर सम्बन्धित है परन्तु मूलतः स्वतंत्र ईकाइयॉ है।

जिस प्रकार बुद्धि के मापन हेतु सामान्य पेपर–पेन्सिल परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है एवं ये परीक्षण पर्याप्त संख्या में उपलब्ध है परन्तु संवेगात्मक बुद्धि के सम्बन्ध में यह अपर्याप्त है एक अध्ययन में पाया कि उच्च बुद्धि लब्धि वाले व्यक्ति प्रायः बौद्धिक उपलब्धियों में दक्ष है परन्तु व्यक्तिगत उपलब्धियों में बुद्धि लब्धि से कोई मेल नहीं है। उच्च बुद्धि लब्धि वाले व्यक्तियों में विस्तृत बौद्धिक रूचियॅा एवं योग्यताऐं पाई जाती है। परन्तु उच्च बौद्धिक संवेगात्मक बुद्धि धारित करने वाला व्यक्ति सामाजिक रूप से दक्ष होता है एवं प्रसन्न होता है एवं सहानुभूतिपूर्ण तथा सम्बन्धों में सहिष्णु होता है। उसका संवेगात्मक जीवन समृद्ध होता है एवं वह सामाजिक धरातल पर अधिक स्वीकार्य होते हैं।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न निर्धारक लक्षण होते हैं तथा आत्म या स्व के बारे में उस व्यक्ति की अवधारणा या उसका सहज विश्वास मानव व्यक्तित्व का एक निर्धारक लक्षण कहा जा सकता है। इस लक्षण को मनोवैज्ञानिक भाषा में आत्मसम्मान कहते हैं। आत्मसम्मान का अर्थ व्यक्ति का सकारात्मक एवं नकारात्मक संदर्भ में स्वयं का मूल्यांकन है। आत्मसम्मान का अर्थ व्यक्ति की स्वयं की स्वीकार्यता स्वयं को मान्यता प्रदान करने की धारणा स्वयं का मूल्य या स्वयं को वैधता प्रदान करने की प्रवृत्ति के समान है। स्वयं की भावना या अपने संदर्भ में विचार या अपने क्षमताओं के विषय में सकारात्मक सोच एवं दक्षता व्यक्ति के आत्म सम्मान का निर्धारण करती है । आत्मसम्मान को सकारात्मक संदर्भ में इस प्रकार भी कह सकते हैं कि यह व्यक्ति की अपनी क्षमता, शक्ति एवं स्वयं को मूल्य प्रदान करने कि संकल्पनाए है। आत्मसम्मान को सकारात्मक संदर्भ में इस प्रकार से समझा जा सकता है कि व्यक्ति अपनी क्षमता ,शक्तियां और कमजोरियों को स्वीकार करें और स्वयं को मूल्य प्रदान करें। यह व्यक्ति का स्वयं का दायित्व है कि अपनी जरूरतों के अनुसार प्रतिक्रिया करने, अपने लक्ष्य तय करने, लक्ष्य के अनुरूप योजना निर्माण कर उसकी प्राप्ति सुनिश्चित करने का एक प्रयास है। जब किसी व्यक्ति को स्नेह प्रदान किया जाता है या उसे अपनेपन

का बोध होता है तो व्यक्ति के आत्म सम्मान में वृद्धि होती है। एक व्यक्ति को मूल्य एवं सम्मान की आवश्यकता होती है। व्यक्ति का आत्मसम्मान तब सुरक्षित रहता है जब व्यक्ति को यह बोध हो कि उसके मूल्यों का सम्मान हो रहा है । यह सुनिश्चित किया जाए कि सम्मान का आधार दक्षता मूल्य एवं क्षमताएं हैं। यह आत्मसम्मान व्यक्ति को संपूर्ण जीवन में सहयोग प्रदान करता है तथा इसके अभाव में व्यक्ति मैं निराशा, असमर्थता पराजय एवं अपमान का भाव उत्पन्न होता है।

मास्लो ने अपनी परिभाषा में आत्मसम्मान को उपलब्धि की श्रेणी पर रखा है। आत्म सम्मान में व्यक्तिगत मूल्य एवं लक्ष्य को प्राप्त करने की भावना सम्मान प्राप्त करने की योग्यता का बोध होता है।

नैथन ब्रैंडन के अनुसार आत्मसम्मान से आषय स्वयं की दक्षता से है जिसमें व्यक्ति जीवन की मौलिक चुनौतियों को स्वीकार करता है एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन के योग्य स्वयं को समझता है।

एच एल सुलिवन के अनुसार आत्म सम्मान से आशय व्यक्ति की दक्षता में व्यक्तिगत मूल्य से है जो व्यक्ति को दृढ़ बनाता है। डीसी ब्रिगेड नें आत्मसम्मान के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए बताया कि स्वयं के विषय में व्यक्ति की समझ एवं उसके आत्मसम्मान का यह संकेतक है।

रोजेनबर्ग ने बताया की आत्मसम्मान से आशय व्यक्ति के स्वयं के विषय में विचार एवं संवेदना से है। कॉपरस्मिथ के अनुसार आत्मसम्मान का अर्थ उस विश्वास से है जिसके आधार पर व्यक्ति अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं को मूल्य प्रदान करता है।

डिजीज के अनुसार मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो में बताया गया कि आत्मसम्मान व्यक्ति के व्यक्तिगत सफलता एवं उसके द्वारा स्वयं से अपेक्षित सफलता का अनुपात है। हम अपने आत्मसम्मान की रक्षा कर सकते हैं। यदि हम अपने लिए प्राप्त करने लायक लक्ष्य जीवन में निर्धारित करें तो यह संभव है। आत्मसम्मान व्यक्ति की परिवर्तनशील क्षमताओं पर केंद्रित होता है।

बैण्डन ने 1994 में आत्मसम्मान की व्याख्या की जिसके निम्न आधार है।

01–चेतनापूर्ण जीवन

02–स्वयं को स्वीकार करने का अभ्यास

03–आत्म दायित्व का बोध

04–व्यक्तिगत निष्ठा का भाव

05–उद्देश्यपूर्ण जीवन

06–स्वयं मुख होने की आदत

आशय यह कि चेतन मस्तिष्क के साथ जीवन यापन करने में व्यक्ति सफलतापूर्वक अपने आत्म सम्मान की रक्षा कर सकता है। यह मनुष्य इस प्रकार के आचरण करता है जहाँ उसका आत्म सम्मान सुरक्षित रह सकें।

बैण्डन ने स्वयं को सम्पूर्णता में स्वीकार करने की मनः स्थिति को आत्म सम्मान का महात्वूपर्ण स्तम्भ माना है एवं स्पष्ट किया है कि यह स्थिति व्यक्ति को मानसिक रूप शान्त एवं क्रियाशील बनाये रख सकती है।

बैण्डन के अनुसार दायित्वपूर्ण व्यवहार वह सोपन है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने निजी, सामाजिक एवं अध्यात्मिक जीवन की आवश्यकताओं का कुशल निर्वहन कर सकता है।उच्च स्तर का आत्मसम्मान अनुभव करने वाला व्यक्ति अपने जीवन की विविध आवश्यकताओं की सम्यक पूर्ति कर सकता है। तथा स्वयं अपने दायित्व का निर्वहन कर आत्म सम्मान को सुरक्षित रख सकता है।

व्यक्तिगत निष्ठा का भाव कार्य संस्कृति की गुणवत्ता का विकास करता है जिससे व्यक्ति कर्तव्यनिष्ठ एवं सजग भाव के रूप में विकसित होता है जो आत्म सम्मान के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

बेण्डन ने यह स्वीकार किया कि जीवन में उद्देश्यों का निर्माण एवं उददेश्य की पूर्ति में स्वयं को रखकर अर्थपूर्ण जीवन यापन सम्भव है जो सामाजिक स्वीकार्यता में वृद्धि करता है जिससे व्यक्ति का आत्म सम्मान सुरक्षित रह सकता है।

बेण्डन ने स्वयं मुखरता को आत्म सम्मान के विकास का महत्वपूर्ण सोपान माना है जहाँ व्यक्ति स्वयं को दृढता पूर्वक व्यक्त करने की प्रवृत्ति सीखता है एवं जीवन को सरल सहज बना सकता है। जहाँ आत्म सम्मान की रक्षा की जा सके।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण.

शोधकर्त्री ने शोध समस्या के विभिन्न आयामों पर समस्या की प्रकृति, विस्तार, निर्मित परिकल्पनाएँ एवं शोध विधि का समीक्षात्मक अध्ययन किया है। समीक्षात्मक अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि संवेगात्मक बुद्धि का सामान्य बुद्धि के साथ धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया जाता है। यह सहम्बन्ध दोनों मनोवैज्ञानिक चर के मध्य साझा–पक्ष की और संकेत करते है।

विल्फोर्ड (2003) ने 11 वीं कक्षा में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित अध्ययन किया एवं पाया कि इस अध्ययन हेतु शोधकर्त्री ने 500 विद्यार्थियों का अध्ययन किया एवं पाया कि संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया जाता है।

पेट्राइड्स एवं अन्य (2004) ने संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी अध्ययन किया। शोधकर्त्री ने इस अध्ययन में 659 विद्यार्थियों का चयन किया। शोधकर्त्री ने पाया कि उच्च बुद्धि लब्धि एवं उच्च संवेगात्मक बुद्धि धारित करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि श्रेष्ठतर है।

गाखर एवं माहस (2006) ने संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित एक अध्ययन किया। शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में जम्मू कश्मीर राज्य के उच्च माध्यमिक स्तर के 400 छात्र/छात्राओं पर अध्ययन किया। यह अध्ययन निजी एवं सरकारी विद्यालयों के साथ–साथ शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र/छात्राओं पर केन्द्रित था। शोधकर्त्री ने पाया कि शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया जाता है।

जगप्रीत एवं कुलबिन्दर (2008) ने संवेगात्मक बुद्धि के सम्प्रत्यात्मक विश्लेषण सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि का मूल, समाजिक बुद्धि में समाहित है जिसमें कुछ स्तर तक बोधात्मक कौशल समाहित है। यह मूल रूप से ज्ञानात्मक कौशल के एकात्मक दृष्टिकोण से भिन्न है।

मिश्रा एवं अन्य (2008) ने रामपुर जनपद के स्नातक स्तर के बालिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि जनजातीय, गैर–जनजातीय एवं अनुसूचित जाति के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर पाया जाता है। शोधकर्त्री ने आजवानी एवं अन्य (2002) द्वारा विकसित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग अपने अध्ययन में किया है।

सुब्रमण्यन एवं श्रीनिवास (2008) ने लिंग के संवेगात्मक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया एवं प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया है। शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में पाया कि बालक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है एवं यह परिणाम पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि में कोई पारस्परिक सम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

वेला (2003) ने प्रथम वर्ष के कालेज विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया इस अध्ययन में 348 बालिकाओं एवं 412 बालकों का अध्ययन किया गया । प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने सर्वे विधि का प्रयोग किया है। शोधकर्त्री ने यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि विद्यार्थियों को संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

कोरसो (2001) ने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया हैं इस अध्ययन में 12 से 16 वर्ष की उम्र के 100 प्रतिभागी है। संवेगात्मक बुद्धि के पॅाच आयामों पर आकड़ें एकत्र करने के लिए पॅाच बिन्दुओं वाले लिकर्ट स्केल का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने यह परिणाम प्राप्त किया कि संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयाम प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के व्यक्तित्व से सहसम्बन्धित है।

जेनाबादी,एच ने संवेगात्मक बुद्धि, आत्म सम्मान एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित एक अध्ययन किया। यह अध्ययन के. पी. गौर विश्वविद्यालय के परास्नातक कक्षा के विद्यार्थियों पर केन्द्रित था जिसमें शोधकर्त्री ने संगत अध्ययन के लिये 150 पुरूष तथा समान रूप से 150 स्त्रियों का चयन किया है। यह चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। यह अध्ययन एक प्रकार का वर्णनात्मक सह–सम्बन्ध अध्ययन है। जिसमें मनोवैज्ञनिक चरों से आकड़े एकत्र करने हेतु विभिन्न संगत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय गणना हेतु एस.पी.एस.एस. का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। शोधकर्त्री ने इस अध्ययन में पाया गया कि पुरूष एवं स्त्री विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है परन्तु महिलाओं का आत्म सम्मान प्राप्तांक पुरूषों की तुलना में कम है।

अन्ट्रेनी (2013) ने वीनस विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के विद्यार्थियो के संवेगात्मक बुद्धि, आत्म सम्मान एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस केस स्टडी में शोधकर्त्री ने 22 विद्यार्थियों का अध्ययन किया।शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त किया कि ''शैक्षिक उपलब्धि का आत्मसम्मान के साथ कोई सह संबंध नहीं है। आशय यह कि शैक्षिक उपलब्धि का उनके समाजिक कौशल से कोई सम्बन्ध नहीं है।''

समस्या का प्रादुर्भाव एवं औचित्य :

शिक्षक एक सामाजिक प्राणी है जिसके प्रत्येक व्यवहार छात्र–छात्राओं एवं समाज के लिए अनुकरणीय होता है। यदि हम छात्रों के संदर्भ में बात करें तो वह अपने शिक्षक के प्रत्येक आचार व्यवहार पर दृष्टि रखते हैं एवं न सिर्फ कक्षा में वरन कक्षा के बाहर भी उनके द्वारा किए गए व्यवहार का अनुकरण करते है। इस प्रकार यह आवश्यक हो जाता है कि अपने आचार व्यवहार में शिक्षक को श्रेष्ठ एवं संयत होना चाहिए। यहां संयत होने से आशय उसके संवेगों के प्रबंधन एवं नियंत्रण से है। शोधकर्त्री ने वर्तमान अनुसंधान में शिक्षक के संवेगात्मक पक्ष तथा उसके द्वारा स्वयं को मूल्य प्रदान करने की प्रक्रिया एवं परिणाम पर अपने अध्ययन को केंद्रित किया है। आशय यह कि एक व्यक्ति की संवेगात्मक बुद्धि तथा उसके आत्म सम्मान के मध्य निकट का संबंध होता है ।

दोनों चरणों का विश्लेषण करने पर पारस्परिक अंतर संबंधों का ज्ञान हो सकता है जो एक शिक्षक के संवेगात्मक बुद्धि के उन्नयन एवं उसके आत्म सम्मान का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इन्हीं उद्देश्य के दृष्टिगत शोधकर्त्री द्वारा एक बेहतर शिक्षक के निर्माण की प्रक्रिया में उनके प्रशिक्षण के दौरान संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्मसम्मान के अध्ययन को औचित्यपूर्ण माना है।

समस्या कथन

बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके स्व भाव के पारस्परिक संबंध के अध्ययन के दृष्टिगत शोधकर्त्री द्वारा 'सीतापुर जनपद के बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्मसम्मान का विश्लेषणात्मक अध्ययन' को शोध समस्या के रूप में चयनित किया गया है।

अनुसन्धान विधि :

नवीन ज्ञान के निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया को अनुसंधान कहते हैं। अनुसंधान एक चरणबद्ध प्रक्रिया है जिसमें शोधकर्ता द्वारा नए ज्ञान के लिए विभिन्न चरों एवं समस्या के विविध पक्षों को समझा जाता है। अनुसंधान का स्वरूप क्रमबद्ध होना चाहिए एवं तार्किक विश्लेषण के द्वारा समस्या का समाधान प्रस्तुत किया जाता है। समस्या के सम्बन्ध में अनुमान लगाये जाते है, परिकल्पनाएं तैयार की जाती है, ऑकड़ों को एकत्र किया जाता है उनका मूल्यांकन होता है एवं अन्ततः नवीन सम्बन्धों के उद्घाटनों के साथ समस्या के नवीन पक्ष की समझ उत्पन्न होती है। हमें नए समाधान पर पहुँचनें के लिये अनुसंधान का स्वरूप तार्किक एवं क्रमबद्ध होना चाहिए।

अनुसंधान के अन्तर्गत हम वैधता एवं विश्वसनीयता पर केन्द्रित होते है। वैधता से आशय सही प्रकिया में विश्वसनीयता एवं वैधता महत्वपूर्ण आयाम है। अनुसंधान एक प्रकार स आकड़ों की शुद्धता एवं प्रक्रिया की वैधता प्रमुख आयाम है जिसमें पूर्ण व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है

न्यादर्शन–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने बी.एड. प्रशिक्षुओं को जनसंख्या के रूप में निर्धारित किया है । अर्थात सीतापुर जनपद के वित्त पोषित महाविद्यालय, स्ववित्तपोषित महाविद्यालय, सह–शिक्षा के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय ग्रामीण एवं शहरी सभी महाविद्यालय के बी.एड. प्रशिक्षुओं से जनसंख्या का स्वरूप तैयार करते हैं। बी.एड. प्रशिक्षु इस अध्ययन की ईकाई हैं। इस प्रकार शोधकर्त्री ने वर्तमान अध्ययन में सीतापुर जनपद के सभी बी.एड. पाठ्यक्रम संचालित करने वाले महाविद्यालयों की सूची प्राप्त की तथा यादृच्छिक रूप से प्रस्तुत सूची से महाविद्यालयों का चयन कर लिया आकड़े एकत्र करते समय शोधकर्त्री ने प्रासंगिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया है

मानक शोध–उपकरण.

शोधकर्त्री ने शोध समस्या से सम्बन्धित चरों के मापन हेतु प्राप्तांक मनोवैज्ञानिक चर के लिये अलग–अलग मापक उपकरणों का चयन किया है।

01 संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण (छात्राध्यापक प्रारूप)

02 आत्म सम्मान मापनी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण (छात्राध्यापक प्रारूप):

संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का निर्माण प्रोफेसर के.एस. मिश्रा (2004) द्वारा किया गया जो छात्राध्यापक प्रारूप है। यह परीक्षण देश के हिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है जो छात्राध्यापकों हेतु उपयुक्त है या अनुकूलित है। इस परीक्षण में कुल 33 प्रश्न है जिसके नीचे 1, 2, 3 एवं 04 से अंकित चार विकल्प दिये गये हैं।

उत्तरदाता द्वारा बहुविकल्पी प्रश्नों में उस उत्तर का चयन करना है जो उसकी दृष्टि से स्वीकार्य है। उत्तर दाता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने उत्तर की क्रम संख्या उत्तर–पत्र पर संम्बन्धित प्रश्न संख्या के सामने बने खाने में लिखा जाता है। प्रयोज्य की स्थिति का अनुमान लगाने के लिए संवेगात्मक बुद्धि से जुड़े विभिन्न आयामों से जुड़े प्रश्न शामिल किए गए हैं।

आत्म सम्मान मापनी :

शोधकर्त्री ने संवेगात्मक बुद्धि के साथ बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान के सम्बन्ध का अध्ययन किया है । आत्म सम्मान चर की प्राप्तांक के रूप में गणनात्मक बनाने के लिये शोधकर्त्री ने डॉ0 सन्तोष धर एवं डॉ0 उपेन्द्र धर द्वारा निर्मित आत्म सम्मान स्केल का चयन किया है। यह आत्म सम्मान स्केल व्यक्त वर्ग पर उपयोगी है इसीलिए शोधकर्त्री ने इस स्केल का चयन किया है। बी.एड. प्रशिक्षुओं की भाषायी सरलता को ध्यान में रखकर हिन्दी रूपान्तरण का प्रयोग संगत अध्ययन में किया गया है।

शोधकर्ता द्वारा कारक विश्लेषण के माध्यम से छह कारकों का चयन किया गया है जो आत्मसम्मान के विविध घटक है। शोधकर्ता द्वारा कारक विश्लेषण के माध्यम से छह कारकों का चयन किया गया है जो आत्मसम्मान के विविध घटक है।

स्केल के प्रशासन हेतु प्रयोज्य को पूर्व में निर्देश दिये जाते है वहीं प्रयोज्य को 10 मिनट का समय दिया जाता है जिससे वह स्केल के पद को पढ़ कर पदों का उत्तर दे सके। स्केल में कोई भी पद कठिन या सरल नहीं है। परीक्षण निर्माणकर्ता द्वारा स्तरीकृत परिणाम प्राप्त करने के लिए पांच स्तर पर विभेदित रेटिंग स्केल का निर्माण किया गया है जिसकी क्रमशः नकारात्मक से सकारात्मक अर्थात इस खेल में एक तरफ पूर्ण असहमति के पद सम्मिलित किये गयें है तथा दूसरी और पूर्ण सहमति के पदों को शामिल किया गया है।

ऑकड़ों का संग्रह :.

बी.एड. प्रशिक्षुओं के परीक्षण हेतु शोधकर्त्री ने जिन जनपद के जिन महाविद्यालयों का चयन किया है उसमें शोधकर्त्री द्वारा महाविद्यालय के प्रशासन से अग्रिम अनुमति के पश्चात ही आंकडें एकत्र करने की प्रक्रिया आरम्भ की गई हैं।

शोधकर्त्री द्वारा चार मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रशासन कर संगत उत्तर–पत्र एकत्र कर लिये गये। शोधकर्त्री द्वारा दिशा निर्देश के अनुरूप अंकन किया गया एवं उत्तर पत्र का अंकन शोधकर्त्री द्वारा स्वयं किया गया है एवं सम्बन्धित आंकड़े एकत्र कर लिये गये हैं।

ऑकड़ों के विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकी :

शोधकर्त्री ने संकलित आकड़ों के विश्लेषण हेतु उनकी प्रकृति के आधार पर साख्यिकीय विधियों का चयन किया है। सांखयिकी प्रक्रिया का प्रयोग चरों के पारस्परिक संबंधों को संख्यात्मक रूप प्रदान करते हैं जिससे उसका विश्लेषण संभव हो

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

सके। इस प्रकार अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य सामन्यीकरण विकसित करना है। जिसके लिए सांख्यिकीय सहयोग प्रदान करती है।

शोधकर्त्री ने सांख्यिकी विश्लेषण हेतु पैरामैट्रिट सांख्यिकी का प्रयोग किया है इसके लिये शोधकर्त्री ने ऐसे न्यादर्श का चयन किया है जो जनसंख्या की प्रकृति से सम्बन्ध रखता है।

विशिष्ट उद्देश्य

शोधकर्त्री द्वारा निर्धारित शोध समस्या के संदर्भ में निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं

1 बी.एड. प्रशिक्षुओं के संम्वेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।

2 बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान का अध्ययन।

3 बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म सम्मान के मध्य संबंध का अध्ययन।

परिकल्पनाऐं

शोधकर्त्री द्वारा निर्धारित विशिष्ट उद्देश्य के संदर्भ में निम्नांकित परिकल्पनाऐं निर्मित किए गए हैं

1 पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संम्वेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक प्राप्तांक के मान में सार्थक अन्तर नहीं है।

2 उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बृद्धि प्राप्तांक के मान में सार्थक अन्तर नहीं है।

3 उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मान में सार्थक अन्तर नहीं है।

4 उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मान में सार्थक अन्तर नहीं है।

5 बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बृद्धि प्राप्तांक एवं उनके आत्म सम्मान प्राप्तांक के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

न्यादर्श पर प्रायोजित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों पर प्राप्त आकड़ों का अर्थ प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक होता है कि. आकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाय।

सन्दर्भित अध्ययन में शोधकर्त्री ने जनसंख्या एवं न्यादर्श के प्रकृति के आधार पर सांख्यकीय विधियों का चयन किया है। शोधकर्त्री ने शोध समस्या पर अध्ययन हेतु प्राप्त आंकड़ों को विन्यसित कर उनका उद्देश्यगत वर्गीकरण किया है जिससे व्यवस्थित आकड़ों का प्रयोग सांख्यकीय गणना में किया जा सके।

1.1.अ पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संम्वेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि–

बी0एड0 प्रशिक्षुओं जिनमें कला एवं विज्ञान वर्ग के सभी प्रशिक्षुओं को सम्मिलित किया गया है के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक, प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि को सारणी संख्या 4.1.अ में प्रदर्शित किया गया है।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

सारणी 1.1अ

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि

बी0एड0 प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि
पुरूष	21.9	5.9	.37
महिला	22.1	5.4	.34

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉकों के मध्यमानों की मानक त्रुटि क्रमशः .37 एवं .34 है। संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉाकों के मध्यमान की मानक त्रुटि यह व्यक्त करती है कि 100 न्यायदर्श मध्यमानों मे से 95 न्यायदर्श मध्यमानों $\pm 1.96\ \sigma m$ (± 1.96 X मध्यमान की मानक त्रुटि) सीमा के मध्य है या जनसंख्या मध्यमान के दानों तरफ स्थित है।

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के प्राप्तॉकों के वितरण का मध्यमान क्रमशः 21.9 एवं 22.1 है जो यह व्यक्त करता है कि पुरुष समूह की संवेगात्मक बुद्धि महिला समूह की तुलना में कम है यद्यपि पुरूष समूह का मानक विचलन 5.9 एवं महिला समूह का मानक विचलन 5.4 है जो पुरुष समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक के तुलना मे अधिक प्रसार को बता रहा है। अर्थ यह कि संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण में सम्मिलित पदों के द्वारा व्यक्त आयामों पर पुरूष समूह के प्राप्तॉक अधिक विभेदीकृत है।

1.1.ब पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का क्रान्तिक अनुपात

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक के मध्यमान का अन्तर .19 है तथा स्वतन्त्रता ॲश 498 है इसके आधार पर इनका क्रान्तिक अनुपात .50 है।

सारणी 1.1.ब

पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तॉक का क्रान्तिक अनुपात

बी0एड0 प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमानों का अन्तर	Σd	t	स्वतन्त्रता का ॲश df
पुरूष एवं महिला	21.93 – 22.13	.50	.38	498

सारणी 4.1.ब से स्पष्ट है कि पुरूष एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के समूहों के संवेगात्मक बुद्धि का अन्तर .50 सार्थकता स्तर पर सार्थक नही है यथा t का मान .38 है। मध्यमानों का अन्तर न्यून है जिसका आशय यह कि पुरूषों एवं महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में निम्न स्तर की अन्तर दृष्टिगत है। सामान्य रूप से देखा जाय तो संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के परिवार एवं सामाजिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

1.2 अ उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बृद्धि प्राप्तांक का माध्यमान, मानक विचलन एवं अन्तर की मानक त्रुटि।

वर्तमान में शोध उद्देश्य के रूप में आत्म सम्मान तथा संवेगात्मक बृद्धि के पारस्परिक सम्बन्ध को रखा गया है जिसमें वस्तुनिष्ठता के दृष्टिगत शोधकर्त्री के आत्म सम्मान परीक्षण पर प्राप्त अंकों को समेकित रूप से उच्च एवं निम्न समूह के विभाजन हेतु आधार माना गया है। आत्म सम्मान परीक्षण पर बी.एड. प्रशिक्षुओं द्वारा प्राप्त अंकों के वितरण के चतुर्थांक निर्धारण द्वारा उच्च एवं निम्न वितरण समूह को उच्च एवं निम्न समूह के रूप में स्वीकार किया गया है। आत्म समान परीक्षण प्रात्तांको के वितरण का मध्यांक 94 तथा प्रथम चतुर्थांक 88 एवं तृतीय चतुर्थांक 102 है। इस प्रकार प्राप्तांक वितरण मं 88 से कम अंक प्राप्त करने वाले बी.एड.. प्रशिक्षाओं को निम्न समूह तथा 102 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं के समूह को उच्च समूह के रूप में स्वीकार किया गया है।

सारणी 1.2 अ

उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का मध्यमान, मानक विचलन एवं अन्तर को मानक त्रुटि

बी.एड.. प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि
निम्न आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह	21.2	5.3	.42
उच्च आत्म सम्मान प्रांप्तांक समूह	24.8	4.8	.46

निम्न आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांको का वितरण से प्राप्त मध्यमान 21.2 तथा उच्च आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह के वितरण का मध्यमान 24.8 तथा मानक विचलन 4.8 है । वितरण की केन्द्रिय प्रवृत्ति यह संकेत करती है कि आत्म सम्मान परीक्षण में प्राप्तांको के आधार पर निर्मित निम्न समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का मध्यमान निम्न है जो दोनों चरों के पारस्परिक सम्बन्ध एवं मनोवैज्ञानिक लक्षणों के संगत परिवर्तन का द्योतक है।

इस प्रकार उच्च आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांको के वितरण का मध्यमान उच्च है जो निम्न बी.एड. प्रशिक्षुओं की प्रकृति एवं चरों के समान सम्बन्ध का संकेत दे रहा है। इसी कारण निम्न आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि तुलनात्मक समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि तुलनात्मक गणना में उच्च श्रेणी की है।

उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का बाक्स आरेखीय निरूपण से स्पष्ट है कि साख्यिकी विश्लेषण में दोनों समूह के मानक विचलन की तुलना पर ज्ञात आत्म सम्मान प्राप्तांक के आधार पर निर्धारित उच्च समूह का मानक विचलन निम्न समूह के मानक विचलन के व्युत्क्रमानपाती है अर्थात निम्न आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह की संवेगातम्क बुद्धि प्राप्तांक का वितरण अधिक विविध है अर्थात जिन बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान प्राप्तांक कम है उनके संवेगात्मक बुद्धि में अधिक विविधता परिलक्षित है एवं व्युत्क्रम में उच्च आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक की विविधता कम है।

ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

निम्न आत्म सम्मान प्राप्त करने वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं के समूह के प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के रेखीय आरेख के विश्लेषण मे यह स्पष्ट है कि संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक की प्रकृति समान है अर्थात वितरण की प्रकृति सामान्य सम्भाव्यता वक्र के अनुरूप है। मध्यांक के दोनों तरफ संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का वितरण समान है। परन्तु उच्च आत्म सम्मान समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं को संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का वितरण असामान्य है जो सामान्य सम्भाव्यता वक्र की संकल्पना के प्रतिकूल है। प्रथम चतुर्थांक एवं न्यूनतम अंक के बीच आधिक संख्या में बी.एड. प्रशिक्षुओं के अंक अवस्थित है। जो तृतीय चतुर्थांक एवं अधिकतम अंक के मध्य वितरित अंको की तुलना में कम है। प्रथम एवं तृतीय चतुर्थांक के मध्य अंको का वितरण सममित नहीं है तथा वितरण में ऋणात्मक विषमता है। वितरण की यह प्रकृति इस बात का संकेत देती है कि मध्यमान मध्यांक से अधिक है एवं उच्च प्राप्तांक बिन्दु की ओर प्रवृत्त है।

निम्न आत्म सम्मान समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं को संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का प्रसार उच्च आत्म सम्मान समूह की तुलना में कम है जो निम्न समूह की विविध प्रकृति का संकेत है।

1.2 ब उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह के बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमानों का अन्तर, अन्तर की मानक त्रुटि, स्वतंत्रता का अंश एवं क्रान्तिक अनुपात

आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह के निर्धारण हेतु परीक्षण पर प्राप्त अंको को आधार माना गया है तथा गणना के फलस्वरूप प्राप्त उच्च एवं निम्न समूह के मध्यमानों का अन्तर 3.58 है तथा मध्यमानो के अन्तर की मानक त्रुटि .62 तथा गणना में स्वतंत्रता का अंश 262 है। .05 सम्भाव्यता स्तर पर गणनात्मक मान 5.6 है जो टेबल के मान की तुलना में अधिक है।

सारणी 1.2 ब

उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह के बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमानों का अन्तर, अन्तर की मानक त्रुटि, स्वतंत्रता का अंश एवं क्रान्तिक अनुपात

बी.एड.. प्रशिक्षुओं का समूह	संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों का अन्तर	अन्तर की मानक त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	क्रान्तिक अनुपात
उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान प्राप्तांक समूह	3.58	.62	262	5.6

.05 सम्भाव्यता स्तर पर मध्यमानो के दृष्टिगत अन्तर का कारण मूल रूप से जनसंख्या की प्रकृति मे है तथा यह अन्तर अन्य कारणों नही है। विवेचना यह है कि उच्च आत्म सम्मान समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान मनोवैज्ञानिक चर में अनेक ऐसे चर समाहित है जो उनके संवेगात्मक बुद्धि से साम्य रखते हैं जिसके कारण दोनों में संगत परिवर्तन दृष्टिगत हो।
दोनों समूहों के संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर की सार्थकता से आशय यह है कि निम्न आत्म सम्मान समूह के बी.एड. प्रशिक्षुओं की प्रकृति में संगत विशिष्टता है जिसके कारण उनके संवेगात्मक वुद्धि प्राप्तांक में तुलनात्मक न्यूनता एवं उच्च आत्म सम्मान समूह में अपेक्षाकृत अधिकता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

1.3 अ उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान मानक विचलन एवं मानक त्रुटि।

शोधकर्ता ने सम्पूर्ण बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान के साथ संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया है एवं आत्म सम्मान समूह के निर्धारण में बी.एड. प्रशिक्षुओं के लैंगिक अन्तर भी अध्ययन का विषय रखा है।

शोधकर्ता ने आत्म सम्मान परीक्षण पर पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के प्राप्तांक वितरण से चतुर्थांक निर्धारण कर प्रथम चतुर्थांक तथा न्यूनतम प्राप्तांक के मध्य के प्रशिक्षुओं को निम्न आत्म सम्मान समूह के रूप में माना है। प्रथम चतुर्थांक 89 से न्यूनतम प्राप्तांक के बीच के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं को शोधकर्त्री ने निम्न आत्म सम्मान समूह माना है तथा तृतीय चतुर्थांक यथा 102 एवं उच्चतम प्राप्तांकों के मध्य के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के समूह को उच्च समूह के रूप में स्वीकार किया है वितरण का मध्यांक 95 है।

सारणी 1.3 अ

उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का मध्यमान , मानक विचलन एवं मानक त्रुटि

बी.एड. प्रशिक्षुओं के समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि
उच्च आत्म सम्मान प्राप्तांक के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं का समूह	21.2	5.3	.46
निम्न आत्म सम्मान प्राप्तांक के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं समूह	24.8	4.8	.42

आत्म सम्मान परीक्षण पर प्राप्त पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के प्राप्तांक वितरण के उच्च समूह का मध्यमान 21.2 एवं मानक विचलन 5.3 है तथा निम्न आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का मध्यमान 24.8 एवं मानक विचलन 4.8 है।

इस प्रकार उच्च आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं का मध्यमान निम्न आत्म सम्मान समूह की तुलना में कम है जो परस्पर व्युत्क्रमानुपाती सम्बन्ध को व्यक्त करता है अर्थात पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान प्राप्तांक एवं उनके संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक व्युत्क्रमानुपाती है। उच्च आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं का मानक विचलन 5.3 है जो निम्न आत्म सम्मान समूह के मानक विचलन 4.8 से अधिक है। यह उच्च आत्म सम्मान समूह के अधिक विधिक स्वरूप को व्यक्त कर रहा है। अर्थात उच्च आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि की प्रकृति तुलनात्मक रूप से अधिक विच्छिन्त है तथा निम्न आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि का विवरण कम विच्छिन्न है।

1.3 ब उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमानों का अन्तर, अन्तर की मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक अनुपात

उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों के अन्तर 3.7 है तथा मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.03 है एवं सॉख्यिकीय गणना हेतु स्वतंन्त्रता का अंश 128 है। क्रान्तिक अनुपात का मान 3.6 है।

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, July 2025 Impact Factor: 7.67

सारणी 1.3 ब

उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमानों का अन्तर, अन्तर की मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक अनुपात

पुरूष बी.एड.. प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमान का अन्तर	अन्तर की मानक त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	क्रान्तिक अनुपात
उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान के पुरूष बी.एड. प्रशिक्षुओं	3.7	1.03	128	3.6

.05 के सम्भाव्यता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान 3.6 है। गणनात्मक मान, सारणी के मान से अधिक है। उच्च एवं निम्न समूह के मध्यमानों में उल्लिखित अन्तर पुरूष बी.एड.. प्रशिक्षुओं के जनसंख्या की प्रकृति में है तथा यह अन्तर न्यादर्शन त्रुटि के कारण नहीं है।

1.4 अ उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने बी.एड. प्रशिक्षुओं महिला के आत्म सम्मान सम्बन्धी चर में शामिल विभिन्न मनोवैज्ञानिक पक्ष के महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि के साथ सम्बन्धों का अध्ययन किया है। इस अध्ययन हेतु महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान परीक्षण पर जो अंक प्राप्त किये है उनके वितरण की प्रकृति का अध्ययन किया है एवं चतुर्थांक की गणना के आधार पर उच्च एवं निम्न समूह का निर्धारण किया है।

शोधकर्ता ने आत्म सम्मान परीक्षण पर प्राप्त अंकों के वितरण के आधार पर गणना की एवं वितरण का मध्यांक 93 प्राप्त किया। वितरण के प्रथम चतुर्थांक 87 से कम अंक प्राप्त करने वाले समूह को निम्न समूह तथा 101 अंक से अधिक अंक प्राप्त करने वाले समूह को उच्च समूह के रूप में स्वीकार किया है।

सारणी 1.4 अ

आत्म सम्मान परीक्षण प्राप्तांक के आधार पर निर्धारित उच्च एवं निम्न समूह के महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का मध्यमान, मानक विचलन एवं मध्यमान की मानक त्रुटि।

महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की मानक त्रुटि
उच्च आत्म सम्मान समूह की महिला बी.एड. प्रशिक्षु	25.3	4.3	.53
निम्न आत्म सम्मान समूहकी महिला बी.एड. प्रशिक्षु	21.9	4.4	.54

आत्म सम्मान परीक्षण प्राप्तांक के आधार पर निर्धारित उच्च एवं निम्न समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का मध्यमान 25.3 एवं 21.9 तथा उनका मानक विचलन 4.3 एवं 4.4 है।

महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उच्च आत्म सम्मान परीक्षण प्राप्तांक समूह का मध्यमान निम्न समूह की तुलना में अधिक है जो दोनों चरों के सम्बन्ध को व्यक्त कर रहा है। आशय यह कि आत्म

DOI: 10.48175/IJARSCT-28303

सम्मान परीक्षण के विभिन्न पक्ष महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के सम्बन्ध में संवेगात्क बुद्धि के साथ संगत सम्बन्ध रखते है इसी कारण दोनों चरो में सम्बन्ध परिलक्षित है दोनों समूह के संवेगात्मक बुद्धि का मानक विचलन समान है जो वितरण की समान प्रकृति की ओर संकेत कर कर रहा है।

उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के महिला बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का बाक्स आरेख से स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह जो आत्म सम्मान परीक्षण प्राप्तांक के आधार पर निर्मित किया गया है। महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि के रेखीय आरेख के विश्लेष्ण में निम्न समूह का वितरण असामान्य है ।
न्यूनतम अंक एवं प्रथम चतुर्थांक के मध्य अधिक प्रशिक्षुओं के संवेगात्म्मक बुद्धि प्राप्तांक अन्तर्निहित है तथा तृतीय चतुर्थांक एवं उच्चतम अंक के मध्य कम प्रशिक्षुओं के अंक प्रर्दशित हो रहे है जो वितरण की असामान्यता का संकेत दे रहा है।

निम्न समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्य के 50 प्रतिशत आंकड़ों मे भी वितरण के मध्यांक के दोनो तरफ सममित नहीं है। वितरण मे ऋणात्मक विषमता दिखाई दे रही है । आशय यह है कि वितरण का मध्यमान, मध्यांक से उच्च अंक की तरफ अवस्थित है जो प्रसामान्य वितरण के मान्यताओं के प्रतिकूल है।

उच्च आत्म सम्मान समूह का प्रसार निम्न समूह की तुलना में अधिक है जो प्रसरण को विशिष्टता को बताता है। उच्च आत्म सम्मान समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक का वितरण असामान्य है तथा रेखीय आरेख इस ओर संकेत कर रहा है । वितरण मे ऋणात्मक विषमता प्रदर्शित हो रही है।

1.4 ब उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमानो का अन्तर, अन्तर की मानक त्रुटि, स्वतंत्रता का अंश एवं क्रान्तिक अनुपात

आत्म सम्मान परीक्षण प्राप्तांक के आधार पर निर्धारित उच्च एवं निम्न समूह मे अवस्थित महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि का प्राप्तांको के मध्यमानो में 3.4 इकाई का अन्तर है एवं मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि .76 है। सांख्यिकीय गणना मे स्वतंत्रता का अंश है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि क्रान्तिक अनुपात का मान 4.4 है जो यह बताता है कि

सारणी 1.4ब

उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमानों का अन्तर, अन्तर की मानक त्रुटि, स्वतंत्रता का अंश एवं क्रान्तिक अनुपात

महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं का समूह	मध्यमानों का अन्तर	मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	क्रान्तिक अनुपात
उच्च एवं निम्न समूह के महिला बी.एड. प्रशिक्षु	3.4	.76	129	4.4

उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में स्पष्ट अन्तर है जो उनके जनसंख्या की प्रकृति में उल्लिखित है । .05 के सम्भाव्यता के स्तर पर यह कहा जा सकता है कि मध्यमानो का अन्तर न्यादर्शन त्रुटि के कारण नहीं है वरन यह अन्तर जनसंख्या की प्रकृति के कारण है।

1.5 बी.एड. प्रशिक्षुओं का संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके संगत आत्म–सम्मान के पारस्परिक सह–सम्बन्ध अध्ययन

अध्ययन में उल्लिखित सवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म सम्मान मनोवैज्ञानिक चरों के विश्लेषण में विभिन्न आयामों में समानता दृष्टिगत है जो चरों के पारस्परिक सह–सम्बन्ध को व्यक्त कर रहा है । दोनों चरों के पारस्परिक सम्बन्ध के अध्ययन के लिये शोधकर्त्री ने सह–सम्बन्धतात्मक अध्ययन किया है।

सारणी संख्या 1.5

बी.एड. प्रशिक्षुओं का संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके संगत आत्म सम्मान परीक्षण पर प्राप्त अंकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं सह–सम्बन्ध

समूह	मध्यमान	मानक विचलन	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
बी.एड. प्रशिक्षुओं का संवेगात्मक बुद्धि	22.0	6.6	.21	.01 स्तर पर सार्थक
बी.एड. प्रशिक्षुओं का आत्म सम्मान	92.5	16.8		

सारणी 1.5 में शोधकर्त्री ने बी.एड. प्रशिक्षुओं का संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण प्रर प्राप्त अंकों के आधार पर प्राप्त अंकों के वितरण की वर्णनात्मक सांख्यिकी का उल्लेख किया है । यह मध्यमान संवेगात्मक बुद्धि के सन्दर्भ में 22.0 एवं इस वितरण का मानक विचलन 5.6 है। इसी प्रकार आत्म सम्मान सम्मान के संदर्भ में बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान प्राप्तांक के वितरण का मध्यमान 92.5 है एवं वितरण के केन्द्रिय प्रवृत्ति से विचलन की माप यथा मानक विचलन 16.8 है।

मानक विचलन का यह मान सम्पूर्ण बी.एड्. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान के वितरण की प्रवृत्ति को स्पष्ट कर रहा है। यह संख्यात्मक सांख्यिकीय मान वितरण के विभिन्न स्वरूप को व्यक्त कर रहा है अर्थात आत्म सम्मान चर पर प्राप्त अंकों का वितरण संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक की तुलना में कम विच्छिन है अर्थात मानक विचलन कम है । वर्णनात्मक सांख्यिकी का यह विश्लेषण यद्यपि दोनों चरों के पारस्पारिक सम्बन्ध पर टिप्पणी करने के लिये पर्याप्त नहीं है।

इस प्रकार शोधकर्त्री ने प्रस्तुत अध्ययन में दोनों चरों के सम्बन्ध की स्थापना के लिये पियरसन्स सह–सम्बन्ध गुणांक की गणना की है जिसका मान +.21 है। यह मान दोनों चरों यथा संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक एवं उन्ही बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान के मध्य सम्बन्ध को व्यक्त कर रहा है।

इस प्रकार शोधकर्त्री द्वारा गणना किये गय सह–सम्बन्ध गुणांक के बारे में कहा जा रहा है कि जनसंख्या के सह–सम्बन्ध का मान ŕ ± 2.58 ŕ के मध्य होगा। इस कथन का .01 स्तर पर सार्थक माना जा सकता है अर्थात .99 स्तर पर कहा जा सकता है कि जनसंख्या का सह–सम्बन्ध ŕ ± 2.58 ŕ के बीच में अवस्थित है।

व्याख्याए परिणाम एवं विवेचना

बिन्दु–1.1 पुरूष एवं महिला बी.एड.. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मान में सार्थक अन्तर नहीं है।

व्याख्या–.05 सार्थकता के स्तर पर सांख्यिकी गणना से प्राप्त क्रांन्तिक के अनुपात का मान उसके सारणी मान से कम है। यह अन्तर इस बात का द्योतक है कि लैंगिक अन्तर से बी.एड़. प्रशिक्षुओं के सवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मान में सार्थक अन्तर दिखाई नहीं दे रहा है। महिला बीएड प्रशिक्षुओं एवं पुरुष बीएड प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई विशेष अंतर नहीं है। जो आंकिक भेद है वह साख्रिकीय गणनाओं की प्रक्रिया एवं प्रविधि के कारण है।

लियो डेविस एम. (2011) ने त्रिचरापल्ली जनपद में बी.एड.. प्रशिक्षुओं के शैक्षिक उपलब्धि ,व्यक्तित्व एवं उनके संवेगात्मक बुद्धि सम्बन्धी अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने यह पाया कि पुरुष एवं महिला प्रशिक्षु शिक्षकों के संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जयावर्देना एल.एन. एवं अन्य (2012) ने हाईस्कूल के छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि एवं उनके लिंग तथा विभिन्न सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि बालकों की संवेगात्मक बुद्धि बालिकाओं की तुलना में अधिक है।

इस प्रकार शोधकर्त्री द्वारा निर्धारित उद्देश्य के अनुक्रम में तय की गई शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं है जो अन्य शोध परिणामों के समान हो। शोधकर्त्री ने यह परिणाम प्राप्त किया कि महिला बीएड प्रशिक्षुओं एवं पुरुष बीएड प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

बिन्दु 1.2 बी.एड. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बृद्धि प्राप्तांक एवं उनके आत्म सम्मान प्राप्तांक के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

व्याख्या : बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्म सम्मान प्राप्तांक एवं उनके संगत संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के धनात्मक रेखीय सह–सम्बन्ध है अर्थात प्रयोज्य के आत्म सम्मान की वृद्धि के साथ उनके संवेगात्मक बुद्धि में वृद्धि होती है तथा कमी होने के साथ संगत रूप से संवेगात्मक बुद्धि में कमी परिलक्षित होती है। दोनो चर स्वतंत्र एवं यादृच्छिक रूप से जनसंख्या से न्यादर्श के रूप में प्राप्त किये गये है। .05 सार्थकता स्तर पर सह–सम्बन्ध गुणांक का गणनात्मक मान 498 स्वतंत्रता के अंश पर सारणी मान से कम है। दोनों चरों के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध को प्रमाणित करता है।

बिन्दु 1.3 आत्म सम्मान प्राप्तांक के आधार पर निर्धारित बी.एड़. प्रशिक्षुओं के उच्च समूह एवं निम्न समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

व्याख्या .05 सार्थकता स्तर पर यह कहा जा सकता है कि उच्च आत्म सम्मान समूह एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के बी.एड़. प्रशिक्षुओं के संवेगात्मक बुद्धि में जो अन्तर पाया जा रहा है वह बी.एड़. प्रशिक्षुओं के समुच्चय की प्रकृति में व्याप्त है, अर्थात उच्च एवं निम्न आत्म सम्मान समूह, जनसंख्या से यादृच्छिक चयन की प्रकृति का नहीं है वरन संवेगात्मक बुद्धि का अंतर उच्च एवं निम्न आत्मसम्मान के कारण है।

पुपाला (2023) ने स्कूल शिक्षकों के संवेगात्मक बुद्धि, आत्म सम्मान तथा उपलब्धि अभिप्रेरण सम्बन्धी अध्ययन में ज्ञात किया कि आत्म सम्मान का संवेगात्मक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव है। अध्ययन इस ओर संकेत करता है कि आत्मसम्मान का संवेगात्मक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव है।

शोधकर्त्री ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि निम्न आत्म सम्मान एवं उच्च आत्म सम्मान धारित करने वाले स्कूल शिक्षकों के संवेगात्मक परिस्थितियों से निपटने की क्षमता में अन्तर पाया जाता है। उच्च आत्म सम्मान धारित करने वाले शिक्षक की तुलना में पारस्परिक सम्बन्धों को अधिक प्राभावी ढंग से सुलझाता है।

बिन्दु 1.4 पुरूष बी.एड़. प्रशिक्षुओं के उच्च आत्म सम्मान समूह एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक में सार्थक अन्तर है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, July 2025
Impact Factor: 7.67

व्याख्याः बी.एड्. प्रशिक्षुओं के पुरूष वर्ग की जिन दों समूहों में आत्म सम्मान प्राप्तांक के आधार पर विभाजित किया गया है के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांक के मध्यमान में अन्तर पाया जाता है । परमार (2014) ने कालेज जाने वाले विद्यार्थियों के आत्म सम्मान एवं लिंग के प्रभाव सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्मान स्तर में सार्थक अन्तर पाया जाता है। छात्रों का आत्म सम्मान स्तर छात्राओं के आत्म सम्मान स्तर से उच्च है।

हरीन्दर एस (2022) ने प्रस्तुत अध्ययन में पाया कि पुरूष एवं महिला खिलाडियों के आत्म सम्मान में सार्थक अन्तर पाया जता‍ा है अर्थात पुरूषों का आत्म सम्मान महिलाओं की तुलना में अधिक है।

उल्लिखित अन्तर न्यादर्शन त्रुटि के कारण नहीं है वरन यह जनसंख्या में स्थित है अर्थात चयनित समूह स्वतंत्र प्रकृति के नहीं है। क्रान्तिक अनुपात का गणनात्मक मान उसके सारणी मान से अधिक है जो यह स्थापित करता है कि यह अन्तर जनंसख्या में व्याप्त है एवं यह न्यादर्शन त्रृटि के कारण नहीं हैं।

बिन्दु 1.5 बी.एड्. प्रशिक्षुओं के महिला वर्ग के उच्च आत्म सम्मान समूह एवं निम्न आत्म सम्मान समूह के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों में पाया जाने वाला अन्तर सार्थक है।

व्याख्या आत्म सम्मान के आधार पर दो समूहों का निर्माण किया गया है यथा उच्च आत्म सम्मान समूह एवं निम्न आत्म सम्मान समूह इन महिला बी.एड्. प्रशिक्षुओं के संदर्भ में निर्मित इन दोनों समूहों के संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों में पर्याप्त अन्तर पाया जा रहा है। जो .05 सार्थकता के स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का गणनात्मक मान उसके सारणी मान से अधिक है अर्थात संवेगात्मक बुद्धि का यह अन्तर महिला बी.एड्. प्रशिक्षुओं के जनसंख्या की प्रकृति में है एवं यह न्यादर्शन त्रृटि के कारण नहीं है।

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षक का व्यक्तित्व शिक्षार्थी हेतु एक महत्वपूर्ण निधि है जिससे वह सीखता है। शिक्षक की बुद्धि लब्धि, उनकी संवेगात्मक बुद्धि, आत्म सम्मान, एवं शैक्षिक उपलब्धि उनके व्यावसयिक विशिष्टता के लिये महात्वूपर्ण है।

है। शिक्षण एवं अधिकम एक समाजिक अनुभव हैं। सामाजिक अनुभव में यह आवश्यक होता है कि हम संवेगों को किस प्रकार स्वीकार करें, उसकी समझ कैसी है एवं संवेगों को प्रबन्धन कैसे किया जा सके। एक विद्यार्थी के सामाजिक जीवन को उपयोगी बनाने के लिए आवश्यक है कि संवेगों को संतुलित बनाया जाए।

शोधकर्त्री ने स्वीकार किया है कि प्रशिक्षुओं के व्यावसायिक दक्षता हेतु यह आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व का संवेगात्मक आयाम अधिक परिपक्तव संवेदनशील एवं दृढ हो जिससे यह भविष्य का अध्यापक अपने छात्रों के व्यक्तित्व को समावेशी एवं संवेदनशील बना सके।

शिक्षक अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि संवेगात्मक बुद्धि के साथ साथ आत्मसम्मान के पक्ष को भी जोड़ा जाए जो अध्यापक को कर्तव्य निर्वहन में सहयोग प्रदान करे

एन.सी.एफ.टी.आई 2009 में मानवीय एवं दक्ष शिक्षक के निर्माण को रेखांकित किया गया है जिसके लिये गुणवत्तापूर्ण शिक्षक की आवश्यकता है। बदलते समाज की आवश्यकता की पूर्ति हेतु यह आवश्यक है कि छात्रों को परिवर्तन का बेहतर अनुशीलन कराया जाए।

विद्यालय गतिविधियों का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो संवेगात्मक एवं ज्ञानात्मक मस्तिष्क के प्रशिक्षण में समायोजन रख सकें। सामाजिक रूप से उपयोगी नागरिक के निर्माण में प्रशिक्षु शिक्षकों का प्रशिक्षण एक उपयोगी कदम है।

आत्मसम्मान के सम्यक अध्ययन में प्रस्तुत अनुसंधान का प्रयोग किया जा सकता है। जिससे व्यक्तिगत रूप से आत्म सम्मान के बीज का विकास किया जा सके। छात्रों की बौद्धिक उत्पादकता बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों को आत्म नियंत्रण एवं संवेदनां का प्रशिक्षण दिया जाए।

अनुसंधान की सीमाएँ–

सन्दर्भित अनुंसधान सीतापुर जनपद के परिक्षेत्र पर केन्द्रित है। यद्यपि अनुसंधान के क्षेत्र का भैागौलिक विस्तार करके अनुंसधान की सीमा को बढ़ाया जा सकता है। सीतापुर जनपद को अध्ययन के रूप में स्वीकार करने से अनुंसधान के परिणाम का समान्यीकरण सीमित होगा क्योकि अध्ययन के भगौलिक क्षेत्र का अधिकार सीतापुर जनपद तक सीमित है।

शोधकर्त्री ने यह अध्ययन बी0एड्0 प्रशिक्षुओं पर प्रशासित किया जो जनसंख्या के सन्दर्भ में अनुसंधान की सीमा है। अध्ययन में माध्यमिक, स्नातक, स्नातकोत्तर छात्र–छात्राओं तथा सेवारत कर्मचारिया इत्यादि को सम्मिलित कर अनुसंधान का क्षेत्र विस्तार किया जा सकता है।

शोधकर्त्री ने संवेगात्मक बुद्धि के साथ बी0एड्0 प्रशिक्षुओं के आत्मभाव का अध्ययन किया है। अनेक संगत मनोवैज्ञानिक चर यथा अभिप्रेरण, नेतृत्व क्षमता, तनाव, अध्यापन की गुणवत्ता आदि महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक चर अध्ययन मे छूट रहे है। जिनका संवेगात्मक बुद्धि के साथ सम्बन्ध के अध्ययन की आवश्यकता है। यह शोधकर्त्री के इस अध्ययन को मनोवैज्ञानिक चर के रूप में सीमित करता है।

REFERENCES

[1]. Andreani, W. (2013) Emotional Intelligence, Self Esteem and Academic Achievement: A Case Study of English Department Students, Binus University Vol 4(2) pp 979.

[2]. Corso , s. m. (2001)Emotional Intelligence in Adolescents. How its Relates to Giftedness.

[3]. Golman D, (2008)Emotional Intelligence, Tehran, Roshd.

[4]. Petrides et.al,(2004)A study of Relationship between Emotional Intelligence, Cognitive Ability and Academic Performance.

[5]. Maraichelvi, A., & Rajan, S. (2013) The Relationship between Emotional Intelligence and Acdemic Performance among Final Year Undergraduate. Universal Journal of Psychology, 1(2), 41-45.

[6]. Petrides et.al, (2004) A study of Relationship between Emotional Intelligence, Cognitive Ability and Academic Performance.

[7]. Rosenburg,M.(1965) Society and the Adolescents Self-Image, Princeton, N.J: Princeton University Press.

[8]. Gakhar, S.C.E.Manhas, K.D.(2006), Emotional Intelligence as Correlates to Intelligence, Creativity and Academic Achievement. Department of Education, Punjab University, Chadigarh.

[9]. Mishra Mukti, Rao Vaishali & Bhatpahari Gautami (2008) Emotional Intelligence of College Girls,. Indian Journal of Psychometry and Education,39(2)p150-152, Patna.

[10]. Subramanyam K. & Rao Sreenivasa K. (2008) Academic Achievement and Emotional Intelligence of Secondary School Children.Journal of Community Guidance and Research. Vol. 25 No. 1 ISSN 09701346, p 224-228.